موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامي – جزء 5

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الأردو

المترجم :سيف الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:1

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त5

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म

में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वय ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के एकीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसो श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

22.इस्लामी शरीअ़त के एक विशेषता यह है कि वह भिन्न प्रकार के शिष्टाचार,चरित्र और सदाचारों की ओर बोलाती है,अतः उसने खाने पीन,वस्त्र पहनने,विवाह,यात्रा व उपस्थिति,दयालुओं व तुच्छ व्यवहार करने वालों के साथ,परिजनों,अजनबियों,पडोसी और दूर के परिजनों,राजा व प्रजा,कार्यकर्ताओं,पद धारकों,पत्नि व संतान,जीवित एवं मृत्यों के प्रति व्यवहार के चरित्र सिखाए,(मृत्यों से व्यवहार का तात्पर्य)स्नान कराना,इत्र लगाना,कफन पहनाना,दफन करना और दुआ़ देना है।इसी प्रकार शत्रु और मित्र और युद्ध व शांति की स्थिति में शत्रुता रखने वालों के साथ व्यवहार करने के भी शिष्टाचार बतलाए,निष्कर्ष यह कि व्यवहार से संबंधित जो भी शिष्टाचार

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

हो सकते हैं,इस्लाम ने उन के लिए हमें प्रोत्साहित किया,तथा उन पर पुण्य भी रखा,और प्रत्येक प्रकार के अशिष्टता व असभ्यता से मना फरमाया।

23.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह वैश्विक धर्म है,जो समस्त लोगों के लिए अनुकूल और हर प्रकार के मनुष्यों के लिए उचित है,अल्लाह तआ़ला ने अपने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमायाः

(قل يا أيها الناس إني رسول الله إليكم **جميعا**)

अर्थातःआप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो!मैं तुम सभी की ओर अल्लाह का रसूल हूं।

तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(...नबी विशेष कौ़म(समुदाय)की ओर भेजा जाता था और मुझे समस्त मानव के लिये भेजा गया है)[2]।

24.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह समय और काल के लिए उपयुक्त है,अतः इसकी एक भी शिक्षा मनुष्य की सांस्कृतिक उन्नति के विरूद्ध नहीं है,आठ शताबदियों तक समस्त संसार पर इस्लामी संस्कृति का प्रभुत्व था,जबकि अन्य सभ्यताओं की अभी नींव भी नहीं पड़ी थी,अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमायाः

(ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير)

[2] इसे बोखारी(335)और मुस्लिम(521)ने जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है।

अर्थातःक्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया?और वह सूक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है।

अर्थातःवह ईमान वालों के लिये कोमल होंगे।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

25. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह पूर्व के समस्त धर्मों के गुणों को सम्मिलित है,और इसमें वे बोझ और दंड नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने पूर्व की शरीअ़तों के अनुयायियों पर उनके अवज्ञा के दंड के रूप में निर्धारित किया था,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की विशेषता का उल्लेख करते हुये फरमायाः

(ويضع عنهم إصرهم والأغلال التي كانت عليهم)

अर्थातःऔर उन से उन के बोझ उतार देंगे,तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य।**
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:

फैजुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी